International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

1857 की क्रांति में मालवा के वीर नायको का योगदान

Dr. Prerana Thakur

Maharani Laxmibai Girls PG College, Indore

सारांशः
1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम घटना थी। इस क्रांति की शुरुआत 10 मई, 1857 ई.को मेरठ से हुई, जो धीरे–धीरे कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैल गई। क्रांति की शुरुआत तो एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, लेकिन समय के साथ उसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया, जिसे भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा गया। 19वीं सदी की पहली आधी सदी के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत के बड़े हिस्से पर कब्जा हो चुका था। जैसे–जैसे ब्रिटिश शासन का भारत पर प्रभाव बढ़ता गया, वैसे–वैसे भारतीय जनता के बीच ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष फैलता गया। प्लासी के युद्ध के एक सौ साल बाद ब्रिटिश राज के दमनकारी और अन्यायपूर्ण शासन के खिलाफ असंतोष विद्रोह के रूप में भड़कने लगा जिसने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। उसी का परिणाम 1857 की क्रांति हुई । इस विद्रोह में मध्य प्रदेश का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदेश में यह विद्रोह 3 जून, 1857 को नीमच छावनी से पैदल और घुड़सवार सैनिकों के द्वारा प्रारम्भ हुआ. मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र भी कही पीछे नही रहा है । यहाँ अनेक वीरो ने अपने प्राणों की आहुति दे कर क्रांति को बल दिया ।

मूलशब्दः क्राँति, अन्याय, बलिदान, सैनिक, दमन, सशस्त्र विद्रोह, गुरिल्ला युद्ध

शहीद सआदत खां
मेरठ में मंगल पांडे, पटना में कुंवर सिंह, तो इंदौर में भारत मां के लाडले सपूत मालवा के पठान सआदत खां ने मेरठ क्रांति की चिंगारी को अंगारों में बदल दिया। इनके पूर्वज तीन चार पीढियों से होलकर फौज में कार्यरत रहे थे। सआदत खां होल्कर सेना में पूर्व कमांडेंट हफीज खां का भतीजा था। सआदत खां होल्कर सेना में कमांडेंट बनाना चाहता था पर उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी और वह होल्कर महाराज से खिन्न रहने लगा। क्रांति के समय उसकी आयु 35 वर्ष थी। 1 जुलाई 1857 ईस्वी को इंदौर में हुए विद्रोह का नेतृत्व सआदत खां ने किया इनके आदेश पर ही होलकर सेना के तोपची महमूद खां ने तोप का पहला गोला रेसीडेंसी कोठी पर दागा। विद्रोहियों ने 34 अंग्रेजों को, जिनमे महिलाए और बच्चे भी शामिल थे मौत के घाट उतार दिया।
2 जुलाई को महू के क्रांतिकारी सिपाही इंदौर पहुंच गए और उन्होंने सआदत खां का साथ दिया और कोषालय को लूट लिया गया। 4 जुलाई को सआदत खा छः तोपों और तीन हजार सिपाहियों के साथ ग्वालियर और आगरा की तरफ रवाना हो गए।
12 जुलाई को ये लोग ब्यावरा पहुंचे और उसके बाद ग्वालियर रास्ते में इन्होंने कई बार अंग्रेजी सैनिको को परास्त किया। ग्वालियर पहुंचकर सआदत खा ने महाराजा सिंधिया से मुलाकात की और तीन सप्ताह तक ग्वालियर में ही रुके। शहजादा फिरोजशाह भी मुरार छावनी में आकर उनसे मिल गए। अब सआदत खा के फौज की संख्या लगभग 8 हजार से अधिक हो चुकी थी इन्हीं फौजियों के साथ रास्ते में अंग्रेजो से लड़ते हुए, उन्हें परास्त कर वे आगरा की ओर बढ़े और आगरा में कर्नल ग्रिफिट और सआदत खां की सेना के बीच भीषण संग्राम हुआ, जिसमें अंग्रेजो की विजय हुई और क्रांतिकारी फौज बिखर गई।[1] लगभग सोलह वर्ष तक सआदत खां का कोई पता नहीं चला, और ये क्रांति की अलख जगाते रहे। ब्रिटिश सरकार ने उनके ऊपर पांच हजार का इनाम घोषित किया। अन्ततः 1874 ईस्वी में राजस्थान के बांसवाडा से इन्हें गिरफ्तार किया गया और ब्रिटिश सरकार ने इन पर मुकदमा चलाकर 1 अक्टूबर 1874 ईस्वी को फांसी के फंदे पर लटका दिया।

भागीरथ सिलावट
भागीरथ सिलावट होलकर राजा की पैदल सेना का एक अधिकारी था। 1857 ईस्वी की गदर के दौरान विद्रोह का झंडा उठाने और अंततः फांसी की सजा पाने वाले भागीरथ सिलावट की बहादुरी और देश प्रेम की दास्तान मालवा अंचल और विशेषकर इंदौर शहर के इतिहास का उज्ज्वल और गौरवशाली अध्याय है। 1 जुलाई 1857 ईस्वी को प्रातः 8 बजे खजाना स्थानान्तरण को लेकर होलकर आर्टिलरी के सैनिको और अंग्रेजो के बीच विवाद हो गया, जिससे इंदौर के क्रांतिकारियों की प्रसुप्त इच्छाएं जाग उठी और विद्रोह कर दिया। 1 जुलाई से 4 जुलाई तक विद्रोहियों ने इंदौर रेसीडेंसी पर कब्जा रखा और उसके बाद होलकर महाराजा के असहयोगात्मक रुख को देखकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। भागीरथ सिलावट इंदौर से कुछ क्रांतिकारियों के साथ दिल्ली गए और वहा मुगल

बादशाह बहादुर शाह जफर तथा शहजादे मिर्जा खुसरो से मुलाकात की तथा बहादुरशाह जफर ने महाराज होलकर के नाम से भागीरथ सिलावट को एक पत्र दिया। दिल्ली से इंदौर आते समय देपालपुर में इन्हे इनके 6 साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। भागीरथ और उनके साथियों को 10 अक्टूबर 1857 ईस्वी को इंदौर लाकर कैद कर दिया गया। भागीरथ पर इंदौर में मुकदमा नही चलाया गया। महाराजा तुकोजी राव ने इंदौर के फौजदार को 23 अक्टूबर 1857 को आदेश दिया कि.. भागीरथ को 15 सिपाहियों की सुरक्षा में एक वाहन में देपालपुर ले जाकर वहा के फौजदार को सौप दिया जाए। भागीरथ सिलावट को देपालपुर लाया गया और मोरवर्दी नामक पहाड़ी पर अचानक फासी दे दी गई।[2]

सदाशिवराव गोविन्द

महिदपुर का किला किसी समय एक सुदृढ़ दुर्ग था। इस नगर को क्षिप्रा नदी तीन ओर से घेरे हुए हैं। महिदपुर का अमीन होलकर राज्य का अधिकारी था, लेकिन वह अंदरूनी तौर पर ब्रिटिश सरकार का विरोधी था। महिदपुर छावनी में 4 जुलाई को भारी विद्रोह हुआ। अमीन ने तुरंत ही विलायतियों को इकट्ठा किया तथा घोषणा की. कि सभी विद्रोही महाराज होलकर की सेवा करने के लिए तैयार है तथा महाराजा के चाहने पर महू जाने के लिए तैयार रहें। 8 नवंबर 1857 को विद्रोहियों ने महिदपुर में विद्रोह कर दिया। उन्होंने बंगलो और मिलिट्री लाइन को आग लगा कर शहर को खूब लूटा।[3]

वजीर बेग अपनी 11 नवंबर 1857 की रिपोर्ट में बताते है कि 8 नवंबर की लड़ाई लगभग ढाई घंटे तक चली तथा इस लड़ाई में कप्तान एडजुटेट के साथ 3 अंग्रेज अधिकारी मारे गए। अंततः ब्रिटिश सरकार ने विद्रोह का दमन कर दिया और सदाशिवराव अमीन को ब्रिटिश फोर्स ने पकड़ लिया। 7 जनवरी 1858 को सदाशिवराव को तोप से उड़ा दिया गया।[4]

राजा बख्तावर सिंह

1857 ईस्वी की क्रांति के समय अमझेरा रियासत के शासक बख्तावर सिंह थे। इनका जन्म सन 1802 ईस्वी में हुआ था। इनके पिता राजा अजीत सिंह और मा इद्र कुवारी थी। बख्तावर सिंह सन 1854 ईस्वी में अमझेरा की गद्दी पर बैठे अंग्रेजों 1 से हुई एक संधि के अनुसार अमझेरा राज्य को एक सैनिक टुकडी रखनी पड़ती थी जिसे भील कोर कहा जाता था। इसके खर्च के रूप में अमझेरा राज्य की 20000 रुपए सालाना ब्रिटिश सरकार को देना पडता था। अमझेरा राज्य के अंतर्गत भोपावर में ब्रिटिश सरकार ने एक एजेंसी स्थापित की और वहां पॉलीटिकल असिस्टेंट और भील एजेंट का मुख्यालय बनाया। अमझेरा राज्य में स्थित होने के कारण ब्रिटिश एजेंट का हस्तक्षेप दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा था।[5]

1 जुलाई 1857 को इंदौर में विद्रोह हो गया। इस विद्रोह की खबर अमझेरा पहुंचते ही विद्रोह की तैयारी शुरू हो गई। विद्रोहियों ने राजा बख्तावर सिंह के नेतृत्व में सरदारपुर और भोपावर पर धावा करने का निश्चय किया 3 जुलाई 1857 को विद्रोहियों का दल राजा बख्तावर सिंह के नेतृत्व में मोपावर पहुंचा और वहां लूटमार शुरू कर दी। विद्रोहियों ने हचिंसन के बंगले को तहस–नहस कर डाला और लूट का माल हाथियों और बैल गाड़ियों पर लादकर अमझेरा रवाना कर दिया। क्रांति का जोश सिर्फ अमझेरा में ही नही, वरन पूरे मालवा में था। धार की रानी जीजाबाई भी ब्रिटिश सरकार के खिलाफ षड्यंत्र कर रही थी। रानी का भाई भीमराव भोसले तथा धार राज्य का दीवान रामचंद्र बापू भी इस कार्य में संलग्न थे। भोपावर तथा सरदारपुर में यूरोपियनों को भगाने में कामयाबी प्राप्त करने पर राजा की कुछ और हिम्मत बंधी इंदौर, नीमच और महिदपुर में विद्रोह का श्रीगणेश हो ही गया था. जनता भी विद्रोह में सहयोग दे थी।[6]

राजा बख्तावर सिंह ने धार की रानी के साथ मिलकर 10 अक्टूबर को भोपावर की सरकारी फोर्स पर आक्रमण कर दिया। विद्रोहियों ने भोपावर तथा सरदारपुर को खूब लूटा और उसे जला दिया। राजा बख्तावर सिंह ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। उनका अंग्रेजो से कई बार संघर्ष हुआ। अन्ततः जब राजा बख्तावर सिंह महाराजा होलकर से मिलने के लिए महू जा रहे थे तो 11 नवंबर को बेटमा के पास उन्हें बंदी बना लिया गया और 10 फरवरी 1858 ईस्वी को प्रातः 9:00ः बजे राजा बख्तावर सिंह को फासी दे दी गई।

सीताराम कुँवर

सितंबर 1858 में नर्मदा नदी के दक्षिण में होलकर रियासत के इलाके में और बढ़वानी रियासत में गंभीर विद्रोह शुरू हो गया। इस विद्रोह का नेतृत्व सीताराम कंवर ने किया। उसने होलकर सवारों. सिपाहियों को अपनी ओर मिला लिया और अंग्रेजो के विरुद्ध भीषण विद्रोह कर दिया। उसने घोषित कर दिया कि यह सब कुछ पेशवा के लिए कर रहा है। इनके नेतृत्व में विद्रोहियों ने बालसमंद चौकी को लूट लिया और जामुनी चौकी को लूटकर जला दिया। सीताराम को पकड़ने के लिए सरकार ने 500 रुपए के इनाम की घोषणा की थी।[7]

अकबरपुर में भी सीताराम ने विद्रोह खड़ा कर दिया था जिसका दमन करने के लिए मेजर कीटिंग ने फरजंद अली को भेजा। अंततः विद्रोह का दमन करने के लिए कीटिंग स्वयं गया और अंग्रेजी सेना के साथ विद्रोहियों की बीजागढ़ किले के पास मुठभेड हुई, जिसमे सीताराम कवर मारा गया।[8]

रघुनाथ सिंह मंडलोई

अक्टूबर 1858 ईस्वी के कुछ पहले ही टांडा बारूद के रघुनाथ सिंह मंडलोई भिलाला ने विद्रोह कर दिया और फरार हो गया। इस पर इंदौर दरबार ने उसका वतन बलवंत सिंह मंडलोई के नाम कर दिया। बलवंत सिंह से कहा गया कि वह रघुनाथ सिंह और उनके साथियों को पकड़ने की कोशिश करें। जब रघुनाथ सिंह को पकड़ने की कोशिश की गई तो विद्रोह की गतिविधिया और तीव्र हो गई। रघुनाथ सिंह मंडलोई भिलाला मंडलोईयों की बिरादरी का पटेल था। उसे पकड़ने की ब्रिटिश सरकार ने बहुत कोशिश की। रघुनाथ सिंह अक्सर लूटमार करके बीजागढ़ में ठहरा करता था। मेजर कीटिंग ने उसे पकड़ने के लिए बीजागढ़ किले पर घाया बोला। इस कार्य में होलकर की सेना ने अंग्रेजों का सहयोग दिया।[9] बचाव का कोई रास्ता नजर न आता देख रघुनाथ सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। रघुनाथ मंडलोई भिलाला का क्या अंत हुआ इस संबंध में कोई जानकारी नहीं मिलती।

राजा दौलत सिंह

मालवा के नेमावर परगना में राघोगढ़ नामक एक छोटी सी रियासत थी, जिसमें सिर्फ 22 गांव थे। इसके शासक दौलत सिंह थे। राजा दौलत सिंह ने पूरे नर्मदा कछार के नेमावर क्षेत्र में 1857–58 की क्रांति का नेतृत्व किया। राजा दौलत सिंह ने ब्रिटिश शासन से संघर्ष करने के लिए अपने सहयोगियों की एक परिषद का गठन किया जिसके प्रमुख यह खुद थे। 4 अक्टूबर 1857 ईस्वी को विद्रोहियों ने सतवास के किले को जीत लिया राजा का अगला लक्ष्य छिपानेर पर हमला करना था। विद्रोह के दौरान कैप्टन जे.सी. पुढ होशंगाबाद में डिप्टी कमिश्नर थे। उन्हें होशंगाबाद क्षेत्र का अच्छा ज्ञान था। कैप्टन वुड अपने 10 अक्टूबर 1857 के अर्थ शासकीय पत्र में निमाड परगना में चल रही विद्रोह की गतिविधियों के बारे में लिखते हैं कि पूरे नेमावर परगना पर विद्रोहियों ने कब्जा कर लिया है।[10]

इस प्रकार राजा दौलत सिंह द्वारा किए गए विद्रोह से अंग्रेज भयभीत हो गए। सरकार ने दौलत सिंह को पकड़ने के लिए 2000 रुपए के इनाम की घोषणा की इनके साथी भगवान सिंह एवं रघुनाथ सिंह को पकड़ने के लिए भी इनाम की घोषणा की गई दौलत सिंह का प्रतिरोध ज्यादा दिन नहीं चल सका और रुकमांगद राय की सहायता से उसे पकड़ लिया गया राजा दौलत सिंह ने जहर खाकर प्राण त्याग दिए।

संदर्भ सूची

1ण श्रीवास्तव, भगवानदास, (2008) 1857–60 जंग आजादी में मालया निमाड़, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन।
2ण श्रीवास्तव, भगवानदास, (2009) 1857–60 जंग आजादी में मालया निमाड़, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन।
3ण श्रीवास्तव, भगवानदास, (2010) 1857–60 जंग आजादी में मालया निमाड़, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन।
4. फारेस्ट, अ हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूनिटी, Vol. 3 P/85.
5ण मिश्र, डॉ. सुरेश, ¼2004½ मध्यप्रदेश के रणबाकुरे, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल।
6ण सिंह. रघुबीर, ¼1986½ मालवा के महान विद्रोह कालीन अभिलेख (1857–59) सीतमऊ, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।
7ण मिश्र, डॉ. सुरेश, ¼2004½ मध्यप्रदेश के रणबाकुरे, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल।
8ण सिंह. रघुबीर, ¼1986½ मालवा के महान विद्रोह कालीन अभिलेख (1857–59) सीतमऊ, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।
9ण मिश्र, डॉ. सुरेश, ¼2004½ मध्यप्रदेश के रणबाकुरे, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल।
10ण सिंह. रघुबीर, ¼1986½ मालवा के महान विद्रोह कालीन अभिलेख (1857–59) सीतमऊ, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।